दक्ष®

RSSB

(राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड)

A Complete Book for

संगणक

सामान्य ज्ञान

[General Knowledge]

2023

- प्रत्येक अध्याय में परीक्षोपयोगी तथ्यों का समावेश
- प्रत्येक अध्याय को पाठ्यक्रम के अनुसार वर्गीकृत करके Topics का विवरण
- राजस्थान की विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नों का अध्यायवार समावेश

07 July 2023 को जारी नवीनतम पाठ्यक्रमानुसार

2021 एवं 2018 के प्रश्न-पत्र सम्पूर्ण हल एवं व्याख्या सहित

PART-A

M.K. Yadav

Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM

प्राक्कथन

प्रिय पाठकों,

वर्तमान दौर में प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु परीक्षार्थियों को सामान्यतः दो–तीन माह से अधिक समय नहीं मिलता। इतने कम समय में यदि परीक्षार्थी गलत स्रोत का चुनाव करता है तो वह सफलता से वंचित रह जाता है। आज के भौतिकतावाद और जल्दी पैसा कमाने की होड़ ने पुस्तकों की गुणवत्ता खराब कर दी है। ऐसे में मेरा प्रयास है कि संगणक सामान्य ज्ञान **(General Knowledge)** के इस खण्ड के द्धारा प्रामाणिक एवं सटीक जानकारी प्रतियोगी परीक्षार्थियों तक पहुँचाऊँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह पुस्तक **संगणक (COMPUTOR)** की परीक्षा में परीक्षार्थियों की उम्मीद और आवश्यकता दोनों पर खरी उतरेगी। यद्यपि इस पुस्तक में राजस्थान सामान्य ज्ञान को बखूबी समझाने का प्रयास किया गया है फिर भी पाठकों के सुझाव सदैव सादर आमंत्रित हैं।

शुभकामनाओं सहित!

Mahendra Kumar Yadav

YouTube : PRIME STUDY CENTRE

SYLLABUS

of the competitive examination for the post of

संगणक (COMPUTOR)

Part-A

GENERAL KNOWLEDGE

1. **Geography, Natural Resources and Socio-Economic Development of Rajasthan:** Major physiographic divisions of Rajasthan, Vegetation and Soil, Natural Resources Minerals, Forest, Water, Livestock, Wild Life and its Conservation, Environmental Conservation, major Irrigation Projects, Handicrafts, Development Programmes and Schemes of the State Government, Various Resources of power and Population in Rajasthan.
2. **History, Culture and Heritage of Rajasthan:** History of Rajasthan, Famous Historical & Cultural Places of Rajasthan, Folk Literature, Folk Art, Folk Drama, Lok Devian-Devata, Folk Music and Dance, Fairs & Festivals, Customs, Jewellery, Famous Forts, Temples and Hawelies, Saints of Rajasthan, Paintings- various schools in Rajasthan, Major tourist centres and Heritage Conservation.

विषय-सूची

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	पेज नम्बर

❖ संगणक [Computor] सीधी भर्ती परीक्षा
● सामान्य ज्ञान[General Knowledge] ● 19 दिसम्बर, 2021 .....P-1–P-5

❖ संगणक [Computor] सीधी भर्ती परीक्षा
● सामान्य ज्ञान[General Knowledge] ● 05 मई, 2018 .....P-6–P-8

राजस्थान : सामान्य परिचय
[Rajasthan : General Introduction] 1
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 16

01 # Geography, Natural Resources and Socio-Economic Development of Rajasthan 1–148

1 राजस्थान के प्रमुख भौगोलिक विभाग
[Major Physiographic divisions of Rajasthan] 17
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 27

2 राजस्थान में वन, प्राकृतिक वनस्पति एवं मृदा संसाधन
[Forest, Natural Vegetation & Soil Resources in Rajasthan] ... 29
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 36

3 राजस्थान में खनिज संसाधन
[Mineral Resources in Rajasthan] 38
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 43

4 राजस्थान में जल संसाधन
[Water Resources in Rajasthan] 45
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 57

5 राजस्थान में पशु संपदा एवं डेयरी विकास
[Livestock and Dairy Development in Rajasthan] 58
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 67

6 राजस्थान में कृषि संसाधन
[Agriculture Resources in Rajasthan] 68
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 78

7 राजस्थान की जलवायु एवं मानसून तंत्र
[Rajasthan's Climate and Monsoon System] 79
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 84

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	पेज नम्बर

8 राजस्थान में वन्यजीव और उनका संरक्षण
[Wildlife and Its Conservation in Rajasthan] 85
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 91

9 राजस्थान में पर्यावरण संरक्षण
[Environmental Conservation in Rajasthan] 92
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 94

10 राजस्थान में प्रमुख सिंचाई परियोजनाएँ
[Major Irrigation Projects in Rajasthan] 95
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 103

11 राजस्थान में हस्तशिल्प
[Handicrafts in Rajasthan] 104
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 108

12 राज्य सरकार के विकास कार्यक्रम एवं योजनाएँ
[Development Programmes and Schemes of the State Government] 109
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 120

13 राजस्थान में ऊर्जा के विभिन्न संसाधन
[Various Resources of Power in Rajasthan] 121
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 126

14 राजस्थान की जनसंख्या
[Population of Rajasthan] 128
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 137

15 राजस्थान में औद्योगिक विकास
[Industrial Development in Rajasthan] 139
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 147

02 # History, Culture & Heritage of Rajasthan 149-336

16 राजस्थान के इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत
[Important Sources of History of Rajasthan] 149
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 154

17 प्रागैतिहासिक राजस्थान : राजस्थान की प्राचीन सभ्यताए
[Prehistoric Rajasthan : Ancient Civilizations of Rajasthan] 155
❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 160

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	पेज नम्बर

18 राजस्थान की महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाएँ एवं प्रमुख राजवंश
[Important Historical Events and Major Dynasties of Rajasthan] 161

- ❖ जनपदकालीन राजस्थान 161
- ❖ मगध साम्राज्य के अधीन राजस्थान 162
- ❖ राजपूतों की उत्पत्ति के विभिन्न मत 163
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 163
- ❖ गुर्जर-प्रतिहार राजवंश 164
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 165
- ❖ गुहिल-सिसोदिया राजवंश 165
- ❖ वागड़ के गुहिल 173
- ❖ प्रतापगढ़ के सिसोदिया 173
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 174
- ❖ शाहपुरा के सिसोदिया 174
- ❖ राठौड़ राजवंश [Rathore Dynasty] 175
- ❖ बीकानेर के राठौड़ 178
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 180
- ❖ चौहान-राजवंश 181
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 186
- ❖ कच्छवाह राजवंश 187
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 190
- ❖ राजस्थान के अन्य प्रमुख राजवंश 191
- ❖ धौलपुर का जाट राजवंश 191
- ❖ भरतपुर का जाट राजवंश 191
- ❖ करौली का यादव राजवंश 191
- ❖ जैसलमेर का भाटी राजवंश 192
- ❖ परमार एवं चावड़ा राजवंश 192
- ❖ टोंक का मुस्लिम राजवंश 193
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 193

19 मध्यकालीन राजवंशों की प्रशासनिक व राजव्यवस्था
[Administrative and Polity of Medieval Dynasties] 194

- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 200

20 1857 की क्रांति में राजस्थान का योगदान
[Contribution of Rajasthan in the Revolution of 1857] 201

- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 204

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	पेज नम्बर

21 राजस्थान में सामाजिक और राजनीतिक जागरण के कारक
[Factors of Social and Political awakening in Rajasthan] .. 206
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 210

22 राजस्थान में किसान व जनजातीय आंदोलन
[Peasants and Tribal Movements in Rajasthan] 211
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 218

23 देशी रियासतों में प्रजामण्डल आन्दोलन
[Prajamandal Movement in Princely States] 219
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 223

24 राजस्थान का एकीकरण
[Integration of Rajasthan] 224
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 228

25 राजस्थान के प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल
[Famous Historical & Cultural Places of Rajasthan] 229
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 235

26 राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व
[Major Personalities of Rajasthan] 236
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 248

27 राजस्थान का लोक साहित्य
[Folk Literature of Rajasthan] 250
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 256

28 राजस्थानी भाषा, बोलियाँ, साहित्यक संस्थाएँ
[Rajasthani Language, Dialects, Literary Institutions] 257
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 261

29 राजस्थान में लोक कला, नाट्य, संगीत और नृत्य
[Folk Art, Drama, Music & Dance in Rajasthan] 262
- ❖ राजस्थान में लोक संगीत 262
- ❖ जन सामान्य के लोक गीत 262
- ❖ व्यवसायिक जातियों के लोक गीत 264
- ❖ राजस्थानी लोक संगीत की अन्य पेशेवर जातियाँ 264
- ❖ राजस्थान के क्षेत्रीय लोक गीत 265
- ❖ राजस्थान से सम्बन्धित शास्त्रीय संगीत के प्रमुख घराने 265
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 265
- ❖ राजस्थान में लोक वाद्य 266
- ❖ सुषिर वाद्य यंत्र 267
- ❖ तत् वाद्य यंत्र 267

अध्याय नं.	अध्याय का नाम	पेज नम्बर

- ❖ घन वाद्य यंत्र 268
- ❖ अवनद्ध वाद्य यंत्र 268
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 269
- ❖ राजस्थान के लोक नाट्य 269
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 271
- ❖ राजस्थान के लोक नृत्य 272
- ❖ राजस्थान के प्रमुख क्षेत्रीय नृत्य 272
- ❖ राजस्थान के जातीय/जनजातीय लोकनृत्य 273
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 274

30 राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता एवं देवियाँ
[Major Folk Gods and Goddesses of Rajasthan] 275
- ❖ राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता 275
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 278
- ❖ राजस्थान की प्रमुख लोक देवियाँ 278
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 281

31 राजस्थान के संत एवं सम्प्रदाय
[Saints & Sects of Rajasthan] 282
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 286

32 राजस्थान के मेले व त्योहार
[Fairs and Festivals of Rajasthan] 287
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 292

33 राजस्थान में वस्त्र एवं आभूषण
[Clothes and Ornaments in Rajasthan] 293
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 297

34 राजस्थान के प्रसिद्ध किले, मंदिर और हवेलियाँ
[Famous Forts, Temples & Hawelies of Rajasthan] 298
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 310

35 राजस्थान में चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ
[Various Schools of Painting in Rajasthan] 312
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 318

36 प्रमुख पर्यटन केंद्र एवं विरासत संरक्षण
[Major Tourism centres & Heritage Conservation] 319
- ❖ महत्त्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 335

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर द्वारा आयोजित

संगणक सीधी भर्ती परीक्षा

सामान्य ज्ञान [General Knowledge]

19 दिसम्बर, 2021

से सम्बन्धित पूछे गये प्रश्नों का हल व्याख्या सहित

1. सूची-I को सूची-II से सुमेलित करते हुए सही कूट का चयन कीजिए—

सूची-I	सूची-II
(a) नौटंकी	(1) मेवाड़
(b) रम्मत	(2) बीकानेर
(c) तमाशा	(3) जयपुर
(d) तुर्रा कलंगी	(4) धौलपुर-भरतपुर

कूट

(A) (a-1), (b-2), (c-3), (d-4)
(B) (a-4), (b-2), (c-3), (d-1)
(C) (a-2), (b-3), (c-4), (d-1)
(D) (a-4), (b-3), (c-2), (d-1) **[B]**

व्याख्या—सूची-I (राजस्थान की लोकनाट्य विद्या) का सूची-II (प्रचलित क्षेत्र) से सही मिलान इस प्रकार हैं—

सूची-I	सूची-II
नौटंकी	धौलपुर-भरतपुर
रम्मत	बीकानेर
तमाशा	जयपुर
तुर्रा कलंगी	मेवाड़

- नौटंकी का अर्थ **'नाटक का अभिनय करना'** है, नाथाराम की मंडली ने नौटंकी को धौलपुर व भरतपुर क्षेत्र में प्रसिद्धि दिलाई।
- रम्मत में राजस्थान के सुविख्यात लोक नायकों एवं महापुरुषों पर रचित काव्य रचनाओं को रंगमंच के ऊपर मंचित किया जाता है। इसमें टेरिये के बोल के साथ पात्र नाचते हुए अपनी कला प्रदर्शित करते हैं।
- तमाशे का आयोजन खुले मंच पर होता है, जिसे 'अखाड़ा' कहते हैं। संगीत, नृत्य और गायन इन तीनों की तमाशे में प्रधानता होती है।
- तुर्रा कलंगी में तुर्रा को शिव और कलंगी को पार्वती का प्रतीक माना जाता है। शिव-शक्ति संबंधी विचारों को लोगों तक पहुँचाने का मुख्य माध्यम काव्यमय रचनाएँ थीं, जिन्हें 'दंगल' के नाम से जानते हैं। इसके संवादों को 'बोल' कहते हैं।

2. वन विभाग की प्रशासनिक रिपोर्ट 2020-21 के अनुसार, वन क्षेत्र में सर्वोच्च दो जिले हैं—

(A) बारां, सिरोही (B) उदयपुर, अलवर
(C) बारां, अलवर (D) उदयपुर, बारां **[B]**

व्याख्या—वन विभाग की प्रशासनिक रिपोर्ट 2020-21 के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक वन क्षेत्र वाले जिले क्रमशः इस प्रकार है—

1. उदयपुर — 2753.39 वर्ग किमी.
2. अलवर — 1195.91 वर्ग किमी.
3. प्रतापगढ़ — 1033.77 वर्ग किमी.
4. बारां — 1010.05 वर्ग किमी.

उल्लेखनीय है राजस्थान वन रिपोर्ट 2021 के अनुसार राज्य में अभिलेखित वन क्षेत्र 32864 वर्ग किमी. है। जो राज्य के 9.60% भू-भाग पर विस्तृत है। राज्य में कुल वनावरण 16654.96 वर्ग किमी. है।

3. 2011 की जनगणना के अनुसार, राजस्थान के कौनसे जिलों में 100 से कम जनसंख्या घनत्व है?

(A) जैसलमेर, चूरू, बीकानेर
(B) बीकानेर, बाड़मेर, पाली
(C) बाड़मेर, बारां, हनुमानगढ़
(D) जैसलमेर, बीकानेर, बाड़मेर **[D]**

व्याख्या—2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में जनसंख्या घनत्व 200 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है। राज्य के तीन जिलों में जनसंख्या घनत्व 100 से कम रहा, जो इस प्रकार है–

1. जैसलमेर – 17 (व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)
2. बीकानेर – 78 (व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)
3. बाड़मेर – 92 (व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.)

4. राजस्थान में सीताबाड़ी का मेला किस जिले में आयोजित होता है?

(A) बाड़मेर (B) बीकानेर
(C) बूँदी (D) बारां **[D]**

व्याख्या—राजस्थान में सीताबाड़ी का मेला बारां जिले की शाहबाद तहसील के केलवाड़ा गाँव के निकट सीताबाड़ी में वैशाख पूर्णिमा से ज्येष्ठ अमावस्या तक लगता है। यहाँ स्थित तीन कुण्डों – सीताकुण्ड, लक्ष्मणगढ़ कुण्ड और सूरजकुण्ड में स्नान करना, गंगा स्नान के समकक्ष माना जाता है। यह मेला सहरिया जनजाति की आस्था का प्रमुख आकर्षण है।

5. राजस्थान के संत पीपा के गुरु कौन थे?

(A) रामानुज (B) रामानन्द
(C) रैदास (D) दादू **[B]**

22. राजस्थान के किस जिले में 'राष्ट्रीय जीवाश्म उद्यान' स्थित है?

(A) जोधपुर (B) जयपुर
(C) बाड़मेर (D) जैसलमेर **[D]**

व्याख्या—जीवाश्म उद्यान राष्ट्रीय मरु उद्यान, जैसलमेर में स्थित है। 3162 वर्ग किमी. क्षेत्रफल पर विस्तृत राष्ट्रीय मरु उद्यान राज्य का सबसे बड़ा अभयारण्य है। इसकी स्थापना मई 1981 को की गई थी। इस अभयारण्य में आकल गाँव में 18 करोड़ वर्ष पुराने काष्ठ जीवाश्म **'आकल वुड फोसिल्स पार्क'** स्थित है। गोडावण पक्षी यहाँ पर सर्वाधिक संख्या में पाये जाते हैं।

23. हाड़ौती प्रदेश की मृदा का प्रधान प्रकार है—

(A) वर्टीसोल (B) अल्फीसॉल
(C) इनसेप्टीसॉल (D) एण्टीसॉल **[A]**

व्याख्या—हाड़ौती प्रदेश की मृदा का प्रधान वर्टीसोल है। यह काली मिट्टी है, जो झालावाड़, बारां, बूँदी, कोटा जिलों में मुख्यतः पाई जाती है तथा सवाईमाधोपुर, भरतपुर, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा में सीमित रूप में मिलती है। उल्लेखनीय है कि कोटा, बूँदी, बारां एवं झालावाड़ जिलों का क्षेत्र हाड़ौती कहलाता है।

24. राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (रीको) गठित किया गया था—

(A) वर्ष 1971 में (B) वर्ष 1969 में
(C) वर्ष 1967 में (D) वर्ष 1961 में **[B]**

व्याख्या—राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश गिम (रीको) वर्ष 1969 में गठित किया गया था। यह राजस्थान सरकार की प्रमुख एजेंसी है जिसने औद्योगिक विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके बाद उद्योग को खनिज से अलग करके नवम्बर 1979 में राजस्थान राज्य खनिज विकास की और जनवरी 1980 में राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं विनियोजन निगम लिमिटेड (रीको) की स्थापना की गई। रीको का मुख्यालय जयपुर में है। रीको राज्य के औद्योगिक विकास को गति देने वाली शीर्ष संस्था है।

25. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा सही उत्तर का चयन नीचे दिए गए कूट से कीजिए—

(1) भौराट का पठार कुम्भलगढ़ और राजसमंद के मध्य स्थित है।
(2) उत्खात स्थलाकृति चम्बल बेसिन में मिलती है।
(3) रघुनाथगढ़ उत्तरी अरावली का सर्वोच्च शिखर है।

कूट –

(A) 1 और 3 (B) 1 और 2
(C) 2 और 3 (D) 1, 2 और 3 **[C]**

व्याख्या—भोराठ का पठार दक्षिणी अरावली क्षेत्र में कुंभललगढ़ (राजासमंद) से गोगुन्दा (उदयपुर) तक विस्तृत पठार है। यह राज्य के ऊँचे पठारों में से एक है। चम्बल बेसिन में मुख्यतः उत्खात स्थलाकृति फैली है, साथ ही नवीन कांपीय जमाव भी पाये जाते हैं। चम्बल बेसिन कोटा, सवाई माधोपुर, करौली व धौलपुर जिलों में विस्तृतहै। रघुनाथगढ़, उत्तरी अरावली का सर्वोच्च शिखर है। उत्तरी अरावली का विसतार, जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर व झुंझुनूं जिलों में है। इस क्षेत्र का प्रमुख शिखर सीकर में रघुनाथगढ़ (1055 मीटर) है।

राजस्थान : सामान्य परिचय
[Rajasthan : General Introduction]

राजस्थान का ऐतिहासिक परिचय

- ऋग्वेद में राजस्थान और इसके निकटवर्ती क्षेत्र को **'ब्रह्मवर्त'** कहा गया है। इसी प्रकार वाल्मीकि कृत रामायण में इसे **'मरूकान्तर'** नाम से पुकारा गया है।
- राजस्थान शब्द का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य सिरोही के चावडा वंश के शासक वर्मलात के समय के **बसंतगढ़ शिलालेख** (वि.स. 682/625 ई.) में मिलता है, जिसमें **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द का प्रयोग किया गया है।
- साहित्यिक रूप से **'राजस्थान'** शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **'मुहणौत नैणसी री ख्यात'** में किया गया है। इसके अतिरिक्त 1731 ई. में वीरभान द्वारा रचित **'राजरूपक'** नामक ग्रन्थ में भी राजस्थान शब्द का उल्लेख मिलता है किन्तु उपर्युक्त दोनों ही पुस्तकों में भौगोलिक इकाई के लिए इस शब्द का प्रयोग नहीं किया गया है अपितु **'राजाओं की भूमि'** के संदर्भ में किया गया है।
- भारतीय इतिहास में 7-12वीं शताब्दी का काल **'राजपूत काल'** कहलाता है। इस समय यहाँ अनेक राजपूत राजवंशों ने शासन किया। इसी आधार पर 1800 ई. में सर्वप्रथम **जॉर्ज थॉमस** द्वारा इस भू-भाग के लिए **'राजपूताना'** शब्द का प्रयोग किया गया

Note :–ध्यातव्य है कि आयरलैण्ड निवासी जॉर्ज थॉमस ग्वालियर के मराठा सरदार दौलतराव सिंधिया का सैनिक कमांडर था। 1805 ई. में ब्रिटिश इतिहासकार **विलियम फ्रेंकलिन** ने **'मिल्ट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जार्ज थॉमस'** नामक पुस्तक में सर्वप्रथम इस तथ्य की लिखित पुष्टि की है कि जॉर्ज थॉमस वह पहला व्यक्ति था, जिसने **'राजपूताना'** शब्द का प्रयोग इस भू-भाग के लिए किया था।

- ब्रिटिश काल में प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार **कर्नल जेम्स टॉड** ने 1829 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'एनाल्स एंड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान'** (सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया) में इस भू-भाग के लिए सर्वप्रथम **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया।
- कर्नल टॉड ने प्राचीन बहियों एवं दस्तावेजों के आधार पर **रजवाड़ा'** एवं **'रायथान'** शब्दों का प्रयोग भी किया है।
- राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया में दूसरे चरण (25 मार्च 1948) के दौरान रखे गए नाम **'पूर्व राजस्थान संघ'** में पहली बार राजस्थान शब्द जोड़ा गया।
- एकीकरण के चौथे चरण (30 मार्च 1943) को एकीकरण का अधिकांश कार्य पूर्ण हो जाने के उपलक्ष्य में **'30 मार्च'** को **राजस्थान दिवस** घोषित किया गया।
- एकीकरण के छठे चरण के दौरान **26 जनवरी 1950** को राजस्थान शब्द को **संवैधानिक मान्यता** प्राप्त हुई एवं 1 नवम्बर 1956 को एकीकरण पूर्ण होने पर वर्तमान राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप सामने आया।
- वर्तमान राजस्थान का निर्माण ऐतिहासिक घटनाक्रम का प्रतिफल है। प्राचीन व मध्यकाल में राजस्थान के भिन्न-भिन्न क्षेत्र अपने विशिष्ट प्रादेशिक पहचान बनाए हुए थे, जो निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हैं—

क्र.सं.	प्राचीन नाम	वर्तमान स्थान
1.	यौद्धेय	गंगानगर के आसपास का क्षेत्र
2.	अहिच्छत्रपुर	प्राचीन नागौर का क्षेत्र
3.	गुर्जरत्रा	जोधपुर-पाली क्षेत्र
4.	वल्ल/दुंगल/माड	जैसलमेर क्षेत्र
5.	स्वर्णगिरी/जाबालीपुर	जालौर क्षेत्र
6.	चन्द्रावती	सिरोही-आबू क्षेत्र
7.	शिवि/मेदपाट	उदयपुर-चितौड़ क्षेत्र
8.	वागड़	डूंगरपुर, बाँसवाड़ा का क्षेत्र
9.	कांठल	प्रतापगढ़ (माही नदी का क्षेत्र)
10.	छप्पन का मैदान	प्रतापगढ़-बाँसवाड़ा के मध्य 56 ग्राम समूह
11.	मेवल/देवलिया	डूँगरपुर-बाँसवाड़ा के बीच का भाग
12.	ऊपरमाल	भैंसरोडगढ़ से बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र
13.	ढूंढाड़	जयपुर के आसपास ढूढ नदी का प्रवाह क्षेत्र
14.	शूरसेन	भरतपुर-करौली-धौलपुर क्षेत्र
15.	जांगल	बीकानेर व जोधपुर का उत्तरी भाग
16.	शाकम्भरी	सांभर, अजमेर क्षेत्र
17.	व्याघ्रवार	बाँसवाड़ा
18.	पालन/दशपुर	झालावाड़ क्षेत्र
19.	थली	चूरू-सरदार शहर क्षेत्र
20.	श्रीमाल	बाड़मेर क्षेत्र
21.	मेरवाड़ा	अजमेर, राजसमंद का मेर बाहुल्य क्षेत्र
22.	माखाड़	मुख्यतः जोधपुर संभाग
23.	नेहड़	बाड़मेर, जालौर का कच्छ के रन को स्पर्श करता क्षेत्र, यहाँ समुद्र का जल लहराता था।
24.	गोड़वाड़	पाली एवं दक्षिण-पूर्वी जोधपुर, बाड़मेर व जालौर जिलों में लूणी नदी द्वारा निर्मित मैदानी क्षेत्र।
25.	बांगड़	अरावली के पश्चिम में पाली, नागौर, सीकर, झुंझुनूं जिलों का पुरानी जलोढ़ मिट्टी का क्षेत्र।

4 राजस्थान में जल संसाधन [Water Resources in Rajasthan]

जब कोई मुख्य नदी अपनी सहायक नदियों के साथ मिलकर किसी प्रवाह प्रारूप का निर्माण करती है तो वह उस नदी का **अपवाह तंत्र** कहलाता है। राजस्थान भारत का एक शुष्क प्रदेश है अतः यहाँ नदियों, झीलों व बाँधों का विशेष महत्त्व है, शुष्क प्रदेश होने के नाते यहाँ परम्परागत जल संरक्षण की अनेक विधियाँ भी विकसित हुई हैं। राजस्थान की अधिकांश नदियाँ केवल वर्षा काल में ही प्रवाहित होती हैं। अरावली पर्वत श्रृंखला राजस्थान में मुख्य जलविभाजक का काम करती है और राज्य में बहने वाली नदियों को दो भागों में बाँटती है। इसके अलावा राज्य में अन्तःप्रवाही नदियाँ भी हैं। अतः प्रवाह के आधार पर राजस्थान के अपवाह तंत्र को तीन भागों में बाँटा जाता है, जो निम्न डायग्राम से स्पष्ट है—

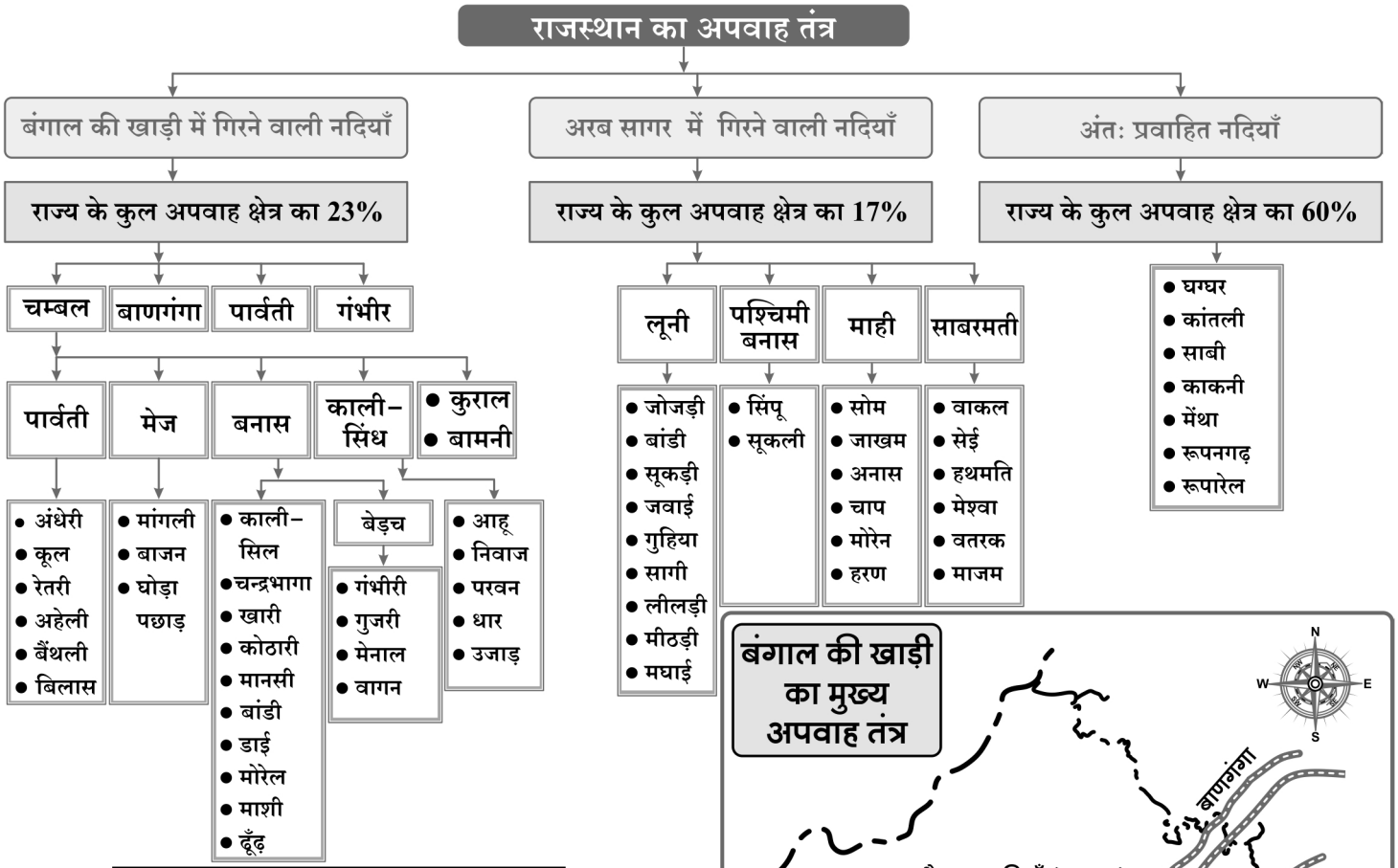

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ

अरावली पर्वत श्रृंखला के पूर्व में स्थित अधिकांश नदियाँ चम्बल, बाणगंगा, गंभीरी, पार्वती आदि नदियों के साथ मिलकर यमुना में मिलती हैं और बंगाल की खाड़ी अपवाह तंत्र का हिस्सा बनती है।

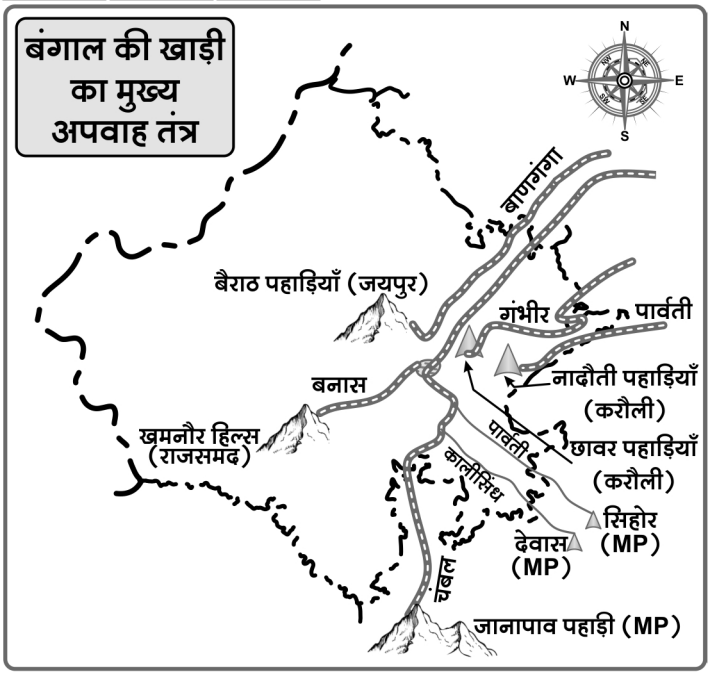

चम्बल नदी का अपवाह तंत्र

- चम्बल नदी का उद्गम मध्यप्रदेश के इंदौर जिले में महु के निकट **जानापाव पहाड़ी** है।
- इसको प्राचीन काल में '**चर्मण्यवती**' के नाम से जाना जाता था। **कामधेनु, चर्मवती, नित्यवाही, मालवगंगा** इसके अन्य नाम हैं।

7 राजस्थान की जलवायु एवं मानसून तंत्र [Rajasthan's Climate and Monsoon System]

जलवायु एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक कारक है, जो न केवल प्राकृतिक तत्त्वों को बल्कि आर्थिक एवं जनसांख्यकीय स्वरूप को भी प्रभावित करता है। राजस्थान की जलवायु **शुष्क** से **उप-आर्द्र मानसूनी** प्रकार की है। राजस्थान में जहाँ अरावली के पश्चिम में उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर, निम्न आर्द्रता तथा तीव्र हवाओं से युक्त **शुष्क जलवायु** (Arid Climate) है। वहीं दूसरी ओर अरावली के पूर्व में **अर्द्धशुष्क** (Semi Arid) एवं **उप-आर्द्र** (Sub-Humid) जलवायु है, जहाँ वर्षा की मात्रा में वृद्धि हो जाती है तथा साथ में वायु की गति में भी कमी रहती है। सम्पूर्ण रूप से राजस्थान की जलवायु भारत की **'मानसूनी जलवायु'** का ही अभिन्न अंग है किन्तु विभिन्न प्राकृतिक कारकों के प्रभाव के कारण राज्य का अधिकांश क्षेत्र शुष्क जलवायु वाला है।

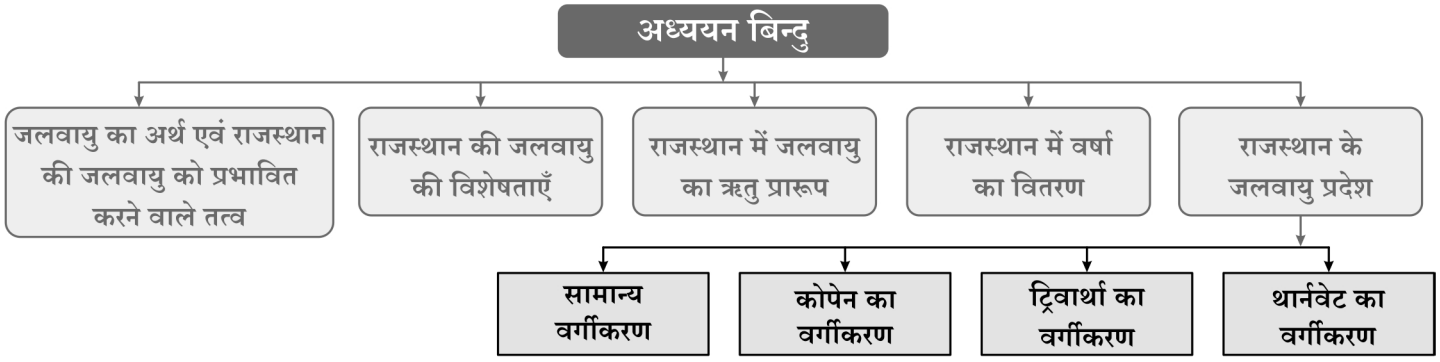

जलवायु का अर्थ

किसी विस्तृत क्षेत्र की लम्बी अवधि (सामान्यतः 30 वर्ष से अधिक) की औसत मौसमी दशाओं को, उस क्षेत्र की **जलवायु** कहते हैं। जबकि किसी स्थान पर किसी विशेष समय में मौसम के घटकों के संदर्भ में वायुमण्डलीय दशाओं के योग को **मौसम** कहते हैं।

राजस्थान की जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्व

(1) स्थिति

❖ अक्षांशीय स्थिति जलवायु का प्रमुख नियंत्रण तत्त्व है। राजस्थान 23°3' से 30°12' उत्तरी अक्षांशों के मध्य स्थित है। 23½° उत्तरी अक्षांश (कर्क रेखा) राज्य के दक्षिणी हिस्सों डूँगरपुर-बाँसवाड़ा जिलों से गुजरती है, अतः राज्य का अधिकांश भाग **शीतोष्ण कटिबन्ध** में स्थित है। लेकिन उत्तर में हिमालय की अवस्थिति के कारण यहाँ ठण्डी हवाओं का प्रभाव नहीं पड़ता और अक्षांशीय दृष्टिकोण से अधिकांश भाग शीतोष्ण कटिबंध में होने के बावजूद जलवायु उष्ण बनी रहती है। उष्ण कटिबंधीय जलवायु के साथ न्यून वर्षा ने यहाँ के अधिकांश भागों में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु की दशाएँ उत्पन्न की हैं।

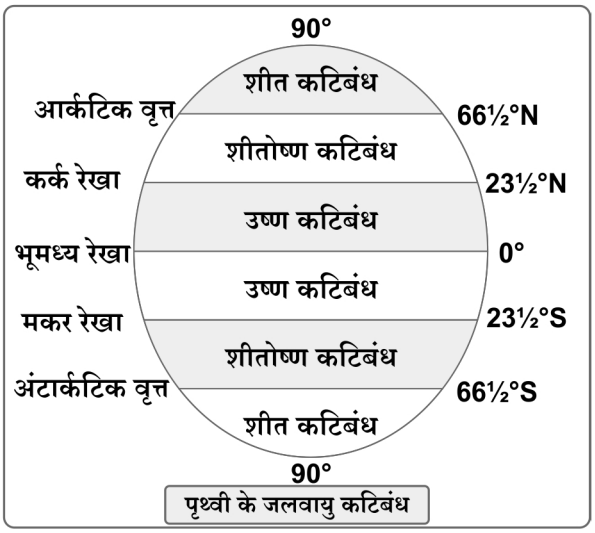

पृथ्वी के जलवायु कटिबंध

(2) समुद्र से दूरी

❖ अरब सागर का समुद्र तट राजस्थान से लगभग 350 कि.मी. दूर है, अतः यहाँ की जलवायु पर सामुद्रिक प्रभाव नगण्य है और सम्पूर्ण राज्य **महाद्वीपीय जलवायु** (Continental Climate) से युक्त है, जो गर्म और शुष्क होती है एवं नमी अपेक्षाकृत कम होती है।

(3) उच्चावच

❖ उच्चावचों का जलवायु पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। अरावली पर्वतमाला की दिशा दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व मानसूनी हवाओं के समानान्तर होने के कारण वे उत्तर की ओर निर्बाध निकल जाती हैं यही कारण है कि मानसूनी हवाओं के प्रभाव क्षेत्र में होते हुए भी राज्य न्यूनतम वर्षा प्राप्त करता है।

❖ पश्चिमी मरुस्थल से आने वाली गर्म हवाओं से अरावली पर्वतमाला पूर्वी राजस्थान को बहुत हद तक बचाए रखती है।

❖ दक्षिणी अरावली में **आबू पर्वत** क्षेत्र ऊँचाई के कारण शेष राज्य से कम तापमान रखता है।

❖ पश्चिमी राजस्थान में विशाल थार मरुस्थल है। यहाँ दैनिक तापान्तर अधिक है। दिन में यह क्षेत्र अत्यधिक गर्म एवं रात में अपेक्षाकृत ठण्डा हो जाता है।

13 राजस्थान में ऊर्जा के विभिन्न संसाधन [Various Resources of Power in Rajasthan]

ऊर्जा संसाधन किसी भी देश या प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ कहलाते हैं, क्योंकि अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में ऊर्जा एक अनिवार्य और आधारभूत संसाधन है। राजस्थान में ऊर्जा के परम्परागत एवं गैर-परम्परागत दोनों ही प्रकार के स्रोत उपलब्ध हैं, अतः इस क्षेत्र में हुई प्रगति को संपूर्णता में समझने की आवश्यकता है। **(सम्पूर्ण अध्याय आर्थिक समीक्षा 2022-23 के अनुसार अपडेट है।)**

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में ऊर्जा संसाधनों का विकास एवं वर्तमान नवाचार
- परम्परागत ऊर्जा संसाधन
- गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधन
- ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख योजनाएँ

राजस्थान में ऊर्जा संसाधनों का विकास एवं वर्तमान नवाचार

- स्वतंत्रता के पश्चात् राजस्थान में केवल 42 गाँव विद्युतीकृत थे एवं कुल स्थापित विद्युत क्षमता मात्र **13.27 मेगावाट** थी।
- **1 जुलाई 1957** को **'राजस्थान राज्य विद्युत बोर्ड'** (RSEB) के गठन के साथ राज्य में बिजली क्षेत्र को प्राथमिकता मिली। यह राज्य में बिजली उत्पादन, हस्तांतरण एवं वितरण की मुख्य एजेंसी थी। लेकिन **19 जुलाई 2000** को ऊर्जा क्षेत्र के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करने और वितरण कार्यों को अलग करने के लिए RSEB को निम्नलिखित 5 अलग-अलग कंपनियों में विभाजित कर दिया गया—
  (1) राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड, जयपुर।
  (2) राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड, जयपुर।
  (3) जयपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, जयपुर।
  (4) अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, अजमेर।
  (5) जोधपुर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड, जोधपुर।

Note :- अंतिम तीनों कंपनियाँ क्रमशः 12, 11 एवं 10 जिलों में विद्युत वितरण करती हैं।

- **राजस्थान विद्युत नियामक प्राधिकरण (RERA)**—की स्थापना **2 जनवरी 2000** में हुई, इसका मुख्यालय **जयपुर** में है। RERA का मुख्य कार्य-राज्य में विद्युत कंपनियों को लाइसेंस देना, विद्युत की दर तय करना एवं विद्युत कंपनियों का नियमन और नियंत्रण करना है।
- राज्य सरकार द्वारा रतनजोत, करंज, जेड्रोफा आदि तेलीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने हेतु **वर्ष 2007** में **राजस्थान बायोफ्यूल नीति** घोषित कर अलग से बायोफ्यूल **प्राधिकरण** का गठन किया गया।
- ऊर्जा क्षेत्र में बायोडीजल को बढ़ावा देने हेतु **'राजस्थान बायोडीजल नियम 2019'** बनाया गया, जिसके अन्तर्गत अब तक 11 बायोडीजल उत्पादक एवं 88 मोबाईल रिटेल आउटलेट्स का पंजीकरण किया जा चुका है।
- राजस्थान में नवम्बर, 2022 तक ऊर्जा की कुल अधिष्ठापित क्षमता बढ़कर **23,487.46 मेगावाट** हो गई है।
- राज्य में शत प्रतिशत ग्रामीण विद्युतीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु नवम्बर, 2022 तक राज्य सरकार द्वारा **43,965** गाँवों एवं **1.14 लाख** ढाणियों एवं **97.05 लाख** ग्रामीण परिवारों का विद्युतीकरण किया जा चुका है।
- राज्य में मार्च, 2019 तक ऊर्जा की उपलब्धता 8116.73 करोड़ यूनिट थी, जो कि **मार्च, 2022** तक बढ़कर **9080.92 करोड़ यूनिट** हो गई है।
- 2018-19 से 2021-22 तक **कुल ऊर्जा उपलब्धता** में 11.90% की वृद्धि हुई है। इसी प्रकार **कुल शुद्ध ऊर्जा उपभोग** में 15.53% की वृद्धि हुई है।

राज्य में ऊर्जा के परम्परागत संसाधन

ऐसे ऊर्जा संसाधन जिनका उपयोग हम प्राचीन समय से ही कर रहे हैं, परम्परागत ऊर्जा संसाधन कहलाते हैं, जैसे-कोयला, खनिज तेल, प्राकृतिक गैस, जलविद्युत आदि। ध्यातव्य है कि 25MW से लघु जलविद्युत परियोजनाएँ गैर-परम्परागत ऊर्जा संसाधनों के अन्तर्गत शामिल की जाती हैं।

कोयला

- कोयला ऊर्जा प्राप्ति का सबसे प्राचीन स्रोत है। इसके चार प्रकार होते हैं-**एन्थ्रेसाइट, बिटुमिनस, लिग्नाइट** तथा **पीट**। एन्थ्रेसाइट सर्वोत्तम किस्म कोयला होता है, जिसमें 80% से अधिक कार्बन होता है।
- राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ किस्म का **लिग्नाइट** कोयला पाया जाता है, जिसमें कार्बन की मात्रा 45 से 55% होती है, इसे **भूरा कोयला** भी कहते हैं।
- राज्य में लिग्नाइट की प्रमुख खानें **पलाना** (बीकानेर) में हैं। इसके अलावा नागौर के **मेड़ता रोड़** तथा बाड़मेर के **कपूरड़ी, जालिपा** क्षेत्रों में भी लिग्नाइट के भण्डार हैं।
- कोयला तापीय विद्युत ऊर्जा (Thermal Power) का प्रमुख स्रोत है। राजस्थान में निम्नलिखित तापीय विद्युत परियोजनाएँ कार्यरत हैं:-

16 राजस्थान के इतिहास के महत्त्वपूर्ण स्रोत [Important Sources of History of Rajasthan]

- ❖ राजस्थान के इतिहास की जानकारी हेतु पुरातात्विक, साहित्यिक एवं पुरालेखीय सामग्री सभी प्रकार के स्रोत उपलब्ध है।
- ❖ राजस्थान में सर्वप्रथम पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य 1871 ई. में **ए.सी.एल.कार्लाइल** के निर्देशन में प्रारम्भ हुआ।
- ❖ राजस्थान में अरावली की कंदराओं जैसे—बूँदी में छाजा नदी एवं कोटा में चम्बल नदी क्षेत्र, विराटनगर (जयपुर), सोहनपुरा (सीकर), हरसौरा (अलवर) आदि स्थानों से प्रागैतिहासिक मानव के चित्रित शैलाश्रय प्राप्त हुए है।
- ❖ राज्य में प्राप्त विभिन्न शिलालेखों, पाषाण पट्टिकाओं, स्तम्भों, तामपत्रों आदि से तिथियुक्त समसामयिक जानकारी मिलती है।
- ❖ जिन शिलालेखों में किसी शासक की उपलब्धियों की यशोगाथा होती है, उसे **'प्रशस्ति'** कहा जाता है।

राजस्थान के महत्त्वपूर्ण शिलालेख

क्र.सं.	अभिलेख	स्थापना वर्ष	विशेष विवरण
1.	**बड़ली का शिलालेख**	443 ई.पू.	• बड़ली (**अजमेर**) से प्राप्त यह **राजस्थान का सबसे प्राचीन शिलालेख** है। अजमेर संग्रहालय में रखा यह शिलालेख **ब्राह्मी लिपि** में उत्कीर्ण है।
2.	**घोसुण्डी शिलालेख** (वर्तमान में उदयपुर संग्रहालय में सुरक्षित)	द्वितीय शताब्दी ई.पू.	• यह अभिलेख **घोसुण्डी गाँव (नगरी, चित्तौड़गढ़)** से प्राप्त हुआ है। यह शिलालेख कई टुकड़ों में विभाजित है। इसकी भाषा **संस्कृत** एवं लिपि **ब्राह्मी** है यह सर्वप्रथम डी.आर. भण्डारकर द्वारा पढ़ा गया। • भागवत धर्म से सम्बन्धित इस शिलालेख में संकर्षण और वासुदेव की पूजा तथा गजवंश के **सर्वतात** द्वारा **अश्वमेघ यज्ञ** करने का उल्लेख है।
3.	**बसंतगढ़ शिलालेख**	625 ई.	• सिरोही के बसतंगढ़ से प्राप्त इस शिलालेख में 'राजस्थानीयदित्य' शब्द का प्रयोग मिलता है।
4.	**अपराजित का शिलालेख**	661 ई.	• **दामोदर** द्वारा रचित इस शिलालेख में गुहिल शासक अपराजित की उपलब्धियों का वर्णन है। (नागदा मेवाड़ से प्राप्त)
5.	**मानमोरी शिलालेख**	713 ई.	• यह **चित्तौड़गढ़** में **मानसरोवर झील** के किनारे **कर्नड टॉड** को प्राप्त हुआ था। इसमें चित्तौड़ की प्राचीन स्थिति एवं **मोरीवंश** के महेश्वर, भीम, भोज व राजा मान का उल्लेख है।
6.	**कणसवा शिलालेख**	738 ई.	• कोटा के कंसुआ गाँव के शिवालय में उत्कीर्ण इस लेख में **धवल** नामक **मौर्यवंशी राजा** का उल्लेख मिलता है। जो यह प्रमाणित करता है कि **मौर्यवंश का राजस्थान से सम्बन्ध** था।
7.	**घटियाला शिलालेख**	861 ई.	• **घटियाला** (जोधपुर) से प्राप्त इस अभिलेख में मण्डोर के प्रतिहार शासक कक्कुक का वर्णन है। इसमें **संस्कृत भाषा** में शिलालेख के लेखक **मग** और उत्कीर्णकर्ता **कृष्णेश्वर** का उल्लेख है।
8.	**सारणेश्वर प्रशस्ति**	953 ई.	• **उदयपुर के सारणेश्वर मन्दिर** से प्राप्त इस प्रशस्ति से वराह मंदिर की व्यवस्था, स्थानीय व्यापार, कर, शासकीय पदाधिकारियों आदि विषय में पता चलता है।
9.	**हर्षनाथ प्रशस्ति**	973 ई.	• **सीकर के हर्षनाथ पहाड़ी** से प्राप्त इस प्रशस्ति में **चौहानों का वंशक्रम** एवं **उपलब्धियों** का वर्णन है।
10.	**किराड़ू शिलालेख**	1161 ई.	• **बाड़मेर** के किराडू शिवमंदिर से प्राप्त इस लेख में **संस्कृत भाषा** में **परमारों की उत्पत्ति** ऋषि वशिष्ट के **आबू यज्ञ** से बताई गई है।
11.	**बिजौलिया शिलालेख** (रचयिता गुणभद्र माने जाते हैं।)	1170 ई.	• यह लेख बिजौलिया कस्बे (भीलवाड़ा) के पार्श्वनाथ मंदिर की बड़ी चट्टान पर **संस्कृत भाषा** में उत्कीर्ण है। इसमें **93 पद्य** है जिनसे **चौहानों के इतिहास** की जानकारी मिलती है। इसमें चौहानों को **वत्सगोत्रीय ब्राह्मण** बताया गया है तथा तत्कालीन कृषि, धर्म, शिक्षण व्यवस्था व प्राचीन स्थलों की जानकारी मिलती है।

19 मध्यकालीन राजवंशों की प्रशासनिक व राजव्यवस्था [Administrative and Polity of Medieval Dynasties]

गुप्तों के पतन के बाद से ही राजपूताना में अनेक स्वतंत्र राजपूत रियासतों का उदय हुआ, जिनका उल्लेख हम पिछले अध्याय में कर चुके हैं। मध्यकाल में इन रियासतों ने अपनी विशिष्ट प्रशासनिक, राजनीतिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था कायम की, जो 1947 में देश आजाद होने तक और कमोबेश रूप से राजस्थान के एकीकरण तक बनी रही। यद्यपि राजपूतों की इस व्यवस्था का विस्तृत विवरण तो नहीं मिलता तथापि तत्कालीन राजकीय दस्तावेजों, दानपत्रों एवं साहित्यक ग्रंथों आदि में यंत्र-तंत्र ऐसी व्यवस्थाओं का उल्लेख मिलता है, जिसे निम्न अध्ययन बिन्दुओं के अन्तर्गत समझा जा सकता है।

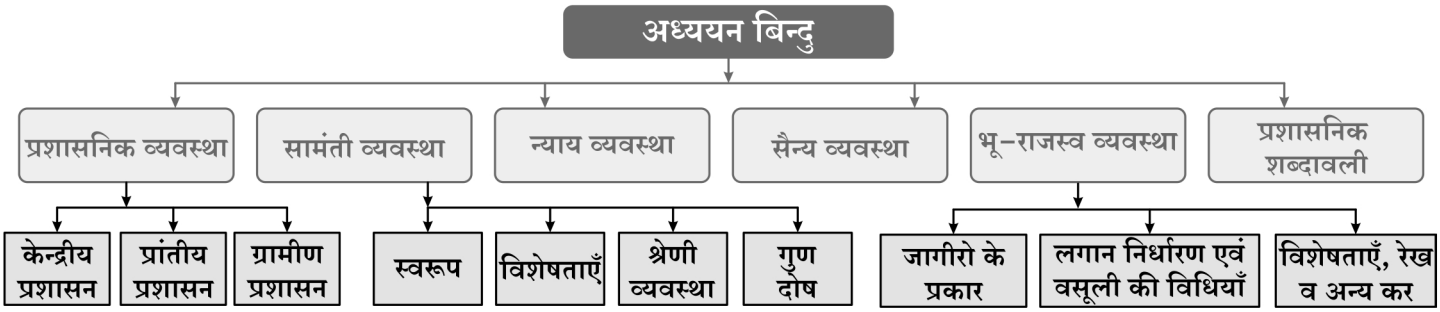

प्रशासनिक व्यवस्था

केन्द्रीय प्रशासन

राजा

- राजा सम्पूर्ण प्रशासन की धुरी या केन्द्र बिन्दु होता था। राजा स्वयं में देवत्व का अंश मानते थे एवं महाराजा, परमभट्टारक, महाराजाधिराज आदि विरुद्ध धारण करते थे।
- राजा सर्वशक्तिमान होते हुए भी स्वेच्छाचारी नहीं हो सकते थे, क्योंकि वे मंत्रिपरिषद्, स्थानीय सरदारों, सामंतों आदि से परामर्श लेकर निर्णय करते थे, साथ ही राजपूताना के शासकों पर धर्म की मर्यादा का बंधन भी था।

युवराज

- केन्द्रीय प्रशासन में राजा के बाद युवराज का प्रमुख स्थान था, जिसे **महाराज कुमार** भी कहते थे। ये युद्ध व शांति के समय राजा का सहायक होता था।
- कभी-कभी राजा अपने जीवनकाल में ही युवराज को सत्ता सौंपकर राज-पाट से संन्यास ले लेता था। जैसे-बप्पा रावल ने राज्य खुमाण को सौंपकर संन्यास ग्रहण कर लिया था।

प्रधान

- यह राजा की मंत्रिपरिषद् का मुखिया होता था एवं राजा का **मुख्य सलाहकार** होता था। इसे **दीवान, मुसाहिब** या **प्रधानमंत्री** भी कहा जाता था। राजा की अनुपस्थिति में राज्य का प्रशासन चलाने का दायित्व इसी का होता था। यह सामान्यतः सर्वप्रमुख सामंत होता था, जैसे-मेवाड़ में सलूम्बर के रावत को प्रधान का पद वंशानुगत रूप से प्राप्त था, जिसे **'भांजगड़'** कहते थे।
- जयपुर में प्रधानमंत्री को **'मुहासिब'** तथा कोटा में **'फौजदार'** या **'दीवान'** कहा जाता था।

बख्शी

- यह **सैन्य विभाग का मुखिया** होता था। इसका मुख्य कार्य सेना के लिए रसद की व्यवस्था करना, सेना में अनुशासन बनाए रखना तथा सैन्य प्रशिक्षणों का निरीक्षण करना था। बख्शी की सहायता हेतु एक **नायब बख्शी** भी होता था, जिसका मुख्य कार्य सेना व किलों पर होने वाले खर्च व 'रेख' का हिसाब-किताब रखना था।

मुत्सद्दी वर्ग

- मध्यकालीन राजपूताना में प्रशासनिक कार्यों को करने हेतु मुत्सद्दी वर्ग की **पदसोपानिक व्यवस्था** थी। यह वर्ग सामान्य प्रशासन की इकाइयों जैसे- परगनों, तहसीलों, ग्रामों आदि पर नौकरशाहों की तरह नियुक्त किया जाता था।
- प्रारंभ में मुत्सद्दी का पद वंशानुगत नहीं था, किन्तु बाद में यह वंशानुगत हो गया, लेकिन इनकी जागीर वंशानुगत नहीं थी, बल्कि इनकी मृत्यु के बाद उसे 'खालसा' (राजकीय भूमि) घोषित कर दिया जाता था।

शिकदार

- यह नगर प्रशासन का प्रमुख अधिकारी था, यह गैर सैनिक कर्मचारियों के रोजगार संबंधी कार्य देखता था। कालांतर में शिकदार का पद नगर कोतवाल के नाम से जाना गया।

संधिविग्रहिक

- इसका उल्लेख अल्लट के **'सारणेश्वर लेख'** में मिलता है। **'यशस्तिलक चम्पू'** के अनुसार संधिविग्रहिक सभी आदेशों और विदेश के लिए पत्र आदि तैयार करता था। यह कई भाषाओं व लिपियों का ज्ञाता होता था।

26 राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व [Major Personalities of Rajasthan]

संसार में प्रत्येक कालखंड में ऐसे व्यक्तियों ने जन्म लिया है, जिन्होंने अपने कार्यों से समाज को एक नई राह दिखाई है। राजस्थान में प्राचीन एवं मध्यकाल में लोकदेवता व देवियों, महापुरुषों, वीर योद्धाओं, कवियों तथा आधुनिक युग के वीर शहीदों एवं प्रबुद्ध व्यक्तित्वों ने समाज के नैतिक एवं भौतिक कल्याण में अविस्मरणीय योगदान दिया है। इस अध्याय में राज्य के प्रमुख व्यक्तियों को निम्नलिखित अध्ययन बिन्दुओं में बाँटा गया है—

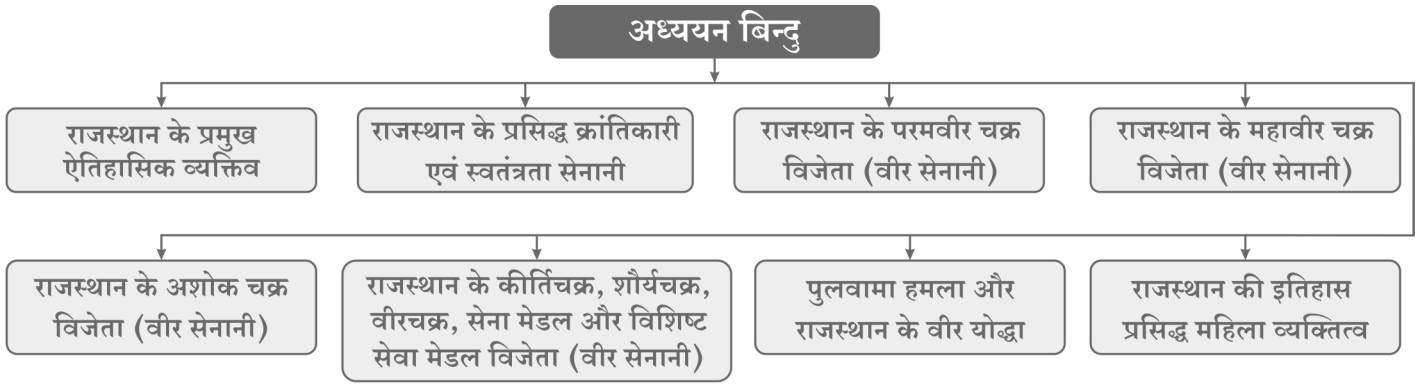

राजस्थान के प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व

दुर्गादास राठौड़

दुर्गादास राठौड़

- **स्वामीभक्त वीर शिरोमणि दुर्गादास** महाराजा **जसवंत सिंह के मंत्री** आसकरण के पुत्र थे। इनका जन्म **13 अगस्त, 1638** को मारवाड़ के **सालवा** गाँव में हुआ। ये जसवंतसिंह की सेना में रहे।
- महाराजा की मृत्यु के बाद उनकी रानियों तथा खालसा हुए जोधपुर के उत्तराधिकारी **अजीतसिंह** की रक्षा के लिए मुगल सम्राट औरंगजेब से उसकी मृत्यु-पर्यन्त (1707 ई.) राठौड़-सिसोदिया संघ का निर्माण करके संघर्ष किया।
- शहजादा **अकबर को औरंगजेब के विरुद्ध सहायता दी** तथा उसके पुत्र-पुत्री (बुलन्द अख्तर व सफीयतुनिस्सा) को इस्लामोचित शिक्षा देकर मित्र धर्म निभाया एवं सहिष्णुता का परिचय दिया।
- अंत में महाराजा अजीतसिंह से अनबन होने पर सकुटुम्ब मेवाड़ चले आये और अपने स्वावलम्बी होने का परिचय दिया।
- दुर्गादास की मृत्यु **उज्जैन में 22 नवम्बर, 1718 में हुई**। उनकी 'वीरता एवं साहस के गुणगान में मारवाड़ में यह उक्ति प्रचलित है **'मायड़ ऐसा पूत जण जैसा दुर्गादास'**।

निहालचंद

- किशनगढ़ चित्रकला शैली को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाने का श्रेय निहालचंद को ही है। यह किशनगढ़ के शासक **सावंतसिंह** के दरबार में था। इसने सावंतसिंह एवं उसकी प्रेयसी बनी-ठनी को राधाकृष्ण के रूप में चित्रित किया। बनी-ठनी का चित्र भारतीय **'मोनालिसा'** कहा जाता है।

दुरसा आढ़ा

- अकबर के समकालीन/दुरसा आढ़ा ने महाराणा प्रताप एवं राव चन्द्रसेन के देश-प्रेम की भावना का यशोगान किया है। **'विरुद्ध छहत्तरी'** (सर्वाधिक प्रसिद्ध), **किस्तार बावनी, 'वीरम देव सोलंकी रा दूहा'** आदि इनकी रचनाएँ हैं।

दयालदास

- **बीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात** के रचनाकार **दयालदास** का जन्म **1798 ई.** में बीकानेर के कुड़ीया नामक गाँव में हुआ।
- **दयालदास री ख्यात** की हस्तलिखित प्रति में राठौड़ों की उत्पत्ति से लेकर महाराजा सरदारसिंह के राज्यारोहण (1851 ई.) तक का इतिहास लिखा गया है।
- यह ख्यात बीकानेर राजवंश का विस्तृत विवरण जानने, मुगल-मराठों के राठौड़ों से सम्बन्ध जानने, फरमान, निशान आदि के राजस्थानी में अनुवाद तथा बीकानेर की प्रशासनिक व्यवस्था को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

कविराज श्यामलदास

- मेवाड़ के **महाराणा शम्भूसिंह** एवं उनके पुत्र **महाराणा सज्जन सिंह** के दरबारी कवि कविराज **श्यामलदास** का जन्म 1836 ई. धोंकलिया (भीलवाड़ा) में हुआ।
- मेवाड़ महाराणा **शम्भूसिंह के आदेश पर** इन्होंने मेवाड़ राज्य का इतिहास लिखना शुरू किया, जो **'वीर विनोद'** नामक ग्रन्थ में संकलित है।

27 राजस्थान का लोक साहित्य [Folk Literature of Rajasthan]

राजस्थानी साहित्य का इतिहास एवं परंपरा

राजस्थानी साहित्य के इतिहास लेखन में डॉ.एल.पी. टेसीटोरी, सीताराम लालस, नरोत्तम स्वामी, डॉ.महावरी प्रसाद शर्मा, मोतीलाल मेनारिया आदि विद्वानों के नाम उल्लेखनीय हैं। राजस्थानी साहित्य की इतिहास परंपरा को हम 4 कालखण्डों के माध्यम से समझ सकते हैं—

1. **प्राचीन काल–वीरगाथा काल (1050–1450 ई.)**
   - ❖ इस काल में भारत पर अरबों, तुर्कों एवं मुगलों का आक्रमण हुआ था, जिनका प्रभाव साहित्य रचना पर भी पड़ा। इस दौरान वीर रसात्मक काव्यों का सृजन किया गया, इसलिए इस काल को वीरगाथा काल नाम दिया गया। **'श्रीधर व्यास'** की 'रणमल्ल छंद' तथा जयानक का 'पृथ्वीराज विजय' इस काल के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं।
2. **पूर्वमध्य काल–भक्ति काल (1450–1650 ई.)**
   - ❖ इस काल में राजस्थान मे विभिन्न संतों व सम्प्रदायों का उदय हुआ। इन सम्प्रदायों ने सगुण व निर्गुण उपासना, गुरु की महता पर बल दिया तथा जाति भेद को मिटाते हुए कहा– **''जात पांत पूछै नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होय।''**
   - ❖ इस काल की रचनाओं में भक्त शिरोमणि **मीरांबाई के पद**, पृथ्वीराज राठौड़ की **'वेलि किसण रुकमणि री'**, माधोदास दधवाड़िया की **'रामरासो'**, ईसरदास की **'हरिरस'** व **'देवियांण'**, सायांजी झूला की **'नागदमण'** आदि प्रमुख रचनाएँ हैं।
3. **उत्तर मध्यकाल–श्रृंगार, रीति एवं नीति परक काल (1650–1850 ई.)**
   - ❖ यह राजनीतिक दृष्टि से अपेक्षाकृत शांति का काल रहा है, इसलिए शासकों ने अपने दरबार में साहित्यकारों व कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया, जिससे **साहित्य** के विविध आयामों का विकास हुआ।
   - ❖ इस काल में श्रृंगार, रीति एवं नीति से संबंधित रचनाएँ प्रस्तुत की गईं, जिनमें **'राजिया रा सोरठा'**, **'चकरिया रा सोरठा'**, **'मोतिया रा सोरठा '**आदि प्रमुख हैं।
   - ❖ काव्य शास्त्र से संबंधित रचनाओं में **कवि मंछाराम** ने **'रघुनाथ रूपक'** प्रस्तुत किया।
4. **आधुनिक काल–विधि विषयों एवं विधाओं से युक्त (1850 से अद्यतन)**
   - ❖ आधुनिक काल में 1857 ई. के पश्चात् समाज में नवीन चेतना का संचार हुआ, साहित्य पर भी इसका प्रभाव पड़ा।
   - ❖ आधुनिक काल में राजस्थानी साहित्य में नवीन चेतना का शंखनाद बूंदी के **सूर्यमल्ल मीसण** एवं मारवाड़ के **कविराजा बांकीदास** द्वारा किया गया, जिससे समाज में राष्ट्रप्रेम व क्रांतिकारी विचारों का प्रसार हुआ।

राजस्थानी साहित्य की प्रमुख शैलियाँ

संस्कृत शैली का साहित्य

- ❖ संस्कृत शैली राजस्थानी साहित्य की प्रारंभिक शैली है। इसमें अनेक शिलालेखों, प्रशस्तियों एवं वंशावलियों का लेखन किया गया है।
- ❖ चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ एवं पृथ्वीराज चौहान ने संस्कृत साहित्य को बढ़ावा दिया, विग्रहराज चतुर्थ ने **हरिकेली** नामक संस्कृत नाटक की रचना की।
- ❖ बीकानेर केअनुपसिंह ने **'अनूप संस्कृत पुस्तकालय'** का निर्माण करवाया।

जैन शैली का साहित्य

- ❖ इस शैली में कथा साहित्य एवं शांत–रस की प्रधानता है।
- ❖ 11वीं से 14वीं शताब्दी तक का राजस्थानी साहित्य अधिकांश जैन शैली में रचित है।
- ❖ हेमचन्द्र सूरी, ऋषिवर्द्धन सूरी (नल दमयंती रास के रचयिता), वज्रसेन सूरी, उघोतन सूरी आदि प्रमुख जैन साहित्यकार हैं।

चारण शैली का साहित्य

- ❖ इसमें **वीररस** एवं **श्रृंगार रस** की प्रधानता है। इस शैली में राजपूतों के शौर्य व जनजीवन की झाँकी मिलती है।
- ❖ बादर ढ़ाढ़ी कृत **'वीर भायण'** चारण शैली की प्रारंभिक रचना है।
- ❖ चन्दबरदायी का **'पृथ्वीराज रासों'**, मुहणौत नैणसी री ख्यात, दयालदास की ख्यात, बाँकीदास री ख्यात, अचलदार खींची री वचनिका (गाडण शिवदास कृत), पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रचित **'वेलि क्रिसन रुकमणी री'**, सूर्यमल्ल मीसण की **'वंश भास्कर'** एवं **'वीर सतसई'** चारण शैली की प्रमुख रचनाएँ हैं।

लोक शैली का साहित्य

- ❖ इसके अन्तर्गत लोकनाट्यों, प्रेमाख्यानों, कहावतों, पहेलियों, फड़ चित्रण, लोक गाथाओं इत्यादि के रूप में साहित्य की रचना हुई।

संत शैली का साहित्य

- ❖ इसके अन्तर्गत संतों ने अपने अनुभवों द्वारा नैतिकता व व्यवहारिकता को जनमानस में प्रसारित किया।
- ❖ दादू री वाणी, मीरां की पदावली, नरसी जी रो मायरो, रामचरण जी की वाणी' संत मावजी के चौपड़ा आदि संत साहित्य की धरोहर हैं।

राजस्थानी गद्य–पद्य की विशिष्ट विधाएँ

- ❖ **ख्यात**—देशी राजाओं द्वारा अपने सम्मान (ख्याति), सफलताओं व विशेष कार्यों का विवरण इतिहास के रूप में लिखवाया गया, जो ख्यात कहलाता है। जैसे–मुहणौत नैणसी री ख्यात (मारवाड़ का इतिहास), दयालदास री ख्यात आदि।

30 राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता एवं देवियाँ [Major Folk Gods and Goddesses of Rajasthan]

राजस्थान में ऐसे महापुरुष जिन्होंने अपने वीरोचित गुणों एवं दृढ़ आत्मबल से समाज को एक नई राह दिखाई और प्राणिमात्र के कल्याण की कामना करते हुए धर्म की रक्षार्थ अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। इन्हीं महापुरुषों को कालांतर में राजस्थान की जनता ने लोक देवताओं व देवियों का दर्जा दे दिया।

राजस्थान के प्रमुख लोक-देवता

रामदेवजी (1405-1458 ई.)

बाबा रामदेवजी

- राजस्थान के सबसे प्रसिद्ध एवं करोड़ों लोगों के आराध्य लोकदेवता बाबा रामदेवजी का जन्म **वि.सं. 1462;** (1405 ई.) की भादवा सुदी द्वितीया को **ऊँडूकामेसर गाँव** के निकट शिव तहसील, बाड़मेर में हुआ। वर्तमान में यहाँ पर बाबा का भव्य मंदिर बनाया गया है।
- ये तंवर वंशीय राजपूत थे, इनके पिता-**अजमलजी तँवर**, माता-**मैणादे**, पत्नी-**नेतलदे** और गुरु-**बालीनाथजी** थे।
- रामदेवजी को हिन्दू **'कृष्ण का अवतार'** मानते हैं और मुस्लिम इन्हें **'रामसा पीर'** कहते हैं।
- इनके **मेघवाल** भक्त **'रिखिया'** कहलाते हैं। **डालीबाई** मेघवाल इनकी धर्म-बहिन थीं।
- ये एकमात्र लोकदेवता है, जो **कवि** भी थे। इन्होंने **'चौबीस वाणियाँ'** नामक ग्रंथ लिखा और **'कामड़ पंथ'** की स्थापना की।
- कामड़ लोग **भगवा पगड़ी** बाँधते हैं एवं रामदेवजी का जागरण भजन (जम्मा) करते हैं।
- **पादरला गाँव (पाली)** के कामड़ जाति की महिला कलाकारों द्वारा **'तेरह ताली नृत्य'** किया जाता है।
- रामदेवजी दिल्ली के शासक **अनंगपाल तोमर (तँवर)** के वंशज थे।
- रामदेवजी के **पगल्यों** (पदचिह्नों) की पूजा होती है। इनके मंदिरों की पंचरंगी ध्वजा को **नेजा** कहते हैं।
- रामदेवरा (रूणेचा) गाँव में इनकी समाधि पर प्रतिवर्ष **भाद्रपद शुक्ल द्वितीया से एकादशी** तक विशाल मेला भरता है, जो राजस्थान में **साम्प्रदायिक एवं जातिगत सद्भाव का सबसे बड़ा मेला है।**
- भाद्रपद शुक्ल द्वितीया **'बाबेरी बीज'** (दूज) के नाम से जानी जाती है।
- रामदेव जी के चमत्कारों को **'पर्चा'** कहते हैं तथा भक्तों के द्वारा गाए जाने वाले भजन **'ब्यावले'** कहलाते हैं।
- सामान्यतः गाँवों में किसी वृक्ष के नीचे ऊँचे चबूतरे पर रामदेव जी के प्रतीक चिह्न **'पगलिये'** स्थापित किए जाते हैं। ये स्थान **'थान'** कहलाते हैं।
- **1458 ई.** में भाद्रपद एकादशी को रामदेव जी ने पोकरण के निकट रामदेवरा में राम सरोवर के किनारे जीवित समाधि ले ली।

Note :- रामदेव जी ऐसे लोकदेवता थे, जो वीर होने के साथ-साथ समाज-सुधारक भी थे। इन्होने जाति प्रथा, मूर्तिपूजा और तीर्थयात्रा का विरोध किया।

पाबूजी (1239-1276 ई.)

- पाबूजी का जन्म **कोलूमण्ड** (जोधपुर) में **धाँधलजी राठौड़** व **कमलादे** के घर हुआ। इनका विवाह **अमरकोट** (वर्तमान पाकिस्तान) के शासक राणा सूरजमल सोढ़ा की पुत्री **फूलमदे** (**सुप्यारदे**) के साथ हुआ।
- उनके बहनोई जिंदराव खींची (जायल का अधिपति) जब देवल बाई की गायों को लूटकर ले जाने लगे तब वे चँवरी में चौथा फेरा बीच में छोड़कर **गायों को बचाने** गए और **वीरगति** को प्राप्त हुए। इनकी समाधि **देचू गाँव (जोधपुर)** में है।
- देवल चारणी ने उन्हें युद्ध हेतु अपनी **'केसर कालमी'** घोड़ी दी थी।
- मारवाड़ में **ऊँट लाने का श्रेय** पाबूजी को है। ऊँट पालक राइका जाति इन्हें अपना आराध्य मानती हैं। **ऊँट के बीमार** होने पर **पाबूजी की पूजा** की जाती है।
- ग्रामीण जनमानस पाबूजी को **'लक्ष्मणजी का अवतार'** मानता है।
- वीरता, प्रतिज्ञापालन एवं गौ रक्षा हेतु बलिदान देने के कारण जनमानस इन्हे लोक देवता के रूप में पूजता है। इनका पूजा स्थल **कोलू (फलौदी)** में है।
- पाबूजी की फड़ का वाचन भील जाति के नायक भोपे **रावणहत्था** वाद्ययंत्र के साथ करते हैं। **'पाबूजी की फड़'** सबसे लोकप्रिय फड़ है। **'पाबूजी के पवाड़े' माठ** वाद्ययंत्र के साथ **रेबारी** चरवाहे गाते हैं।
- पाबूजी का प्रतीक **भाला लिए हुए अश्वारोही** है, अतः इन्हे **'पाबू भालालौ'** उपनाम से भी जानते हैं। **मेहर मुसलमान** इन्हें पीर मानते हैं।
- **कोलूमण्ड** (जोधपुर) में प्रतिवर्ष चैत्र अमावस्या को पाबूजी का विशाल मेला भरता है।
- आशिया मोडजी का ग्रंथ **'पाबू प्रकाश'** इनकी जानकारी का प्रधान स्रोत है।

गोगाजी

- गोगाजी का जन्म **946 ई.** में **ददरेवा (चूरू)** में **जेवरसिंह चौहान** और **बाछलदे** के घर हुआ। इनकी पत्नी का नाम **केलम दे** था और इनके **गुरु गोरखनाथ** थे।
- **साँपों के देवता** के नाम से प्रसिद्ध गोगाजी का स्थान **खेजड़ी के वृक्ष** के नीचे होता है। **सर्पदंश होने पर इनकी पूजा** की जाती है।

31 राजस्थान के संत एवं सम्प्रदाय [Saints & Sects of Rajasthan]

- राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन के उदय के निम्नलिखित कारण थे—
  - मध्यकालीन राजनीतिक संक्रमण की स्थिति।
  - उत्तर भारत में भक्ति आन्दोलन का प्रसार।
  - इस्लाम का प्रवेश एवं सूफीवाद का विस्तार।
- राजस्थान में भी धार्मिक/भक्ति आन्दोलन की दो धाराओं का उदय हुआ—
  - **(1) सगुण परम्परा**—इसके अंतर्गत ईश्वर को **साकार रूप** मानकर, उसके गुणों का महत्त्व दिया जाता है। ये मूर्तिपूजा, संगीत, नृत्य, कीर्तन, भजन आदि द्वारा ईश्वर की उपासना करते हैं।
  - **(2) निर्गुण परम्परा**—इसके अंतर्गत ईश्वर के **निराकार रूप** की भक्ति होती है। इस परम्परा के संत ध्यान, साधना, निर्गुण ईश्वर के भजन आदि के द्वारा उपासना करते हैं तथा मूर्तिपूजा का निषेध करते हैं।

राजस्थान के धार्मिक (भक्ति) आन्दोलन की मुख्य विशेषताएँ

- भक्ति संतों ने मोक्ष प्राप्ति के लिए ईश्वर के प्रेम व भक्ति पर बल दिया।
- विभिन्न धार्मिक कर्मकाण्डों एवं अनुष्ठानों आदि को अस्वीकार किया तथा परमेश्वर की एकता (सार्वभौमिकता) पर बल दिया।
- मोक्ष की प्राप्ति में जातिगत एवं लैंगिक भेदभाव को नकार कर **सामाजिक समानता** को बढावा दिया गया।
- सबसे महत्त्वपूर्ण बात-भक्ति संतों ने अपने संदेशो का प्रचार करने के लिए **स्थानीय/क्षेत्रीय भाषाओं** का प्रयोग किया है ताकि जन-साधारण को धर्म का वास्तविक रूप समझा सकें।
- ईश्वर से साक्षात्कार करने के लिए **गुरु-शिष्य परम्परा** को आवश्यक माना है।
- भक्ति संतों ने **ईश्वर से व्यक्तिगत संबंध** स्थापित करने की शिक्षा दी है।

राजस्थान में निर्गुण परम्परा के संत/सम्प्रदाय

संत धन्ना जी

- राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन का **श्रीगणेश** करने का श्रेय धन्ना को ही है। धन्ना का जन्म टोंक जिले के **धुवन गाँव** में 1415 ई. में एक जाट परिवार में हुआ।
- धन्ना उत्तर भारत के प्रसिद्ध भक्ति संत **रामानन्द** के शिष्य थे। ये **निर्गुण ब्रह्म** के उपासक थे। इन्होंने अपने पैतृक व्यवसाय कृषि कार्य में लीन रहते हुए ही आत्म शुद्धि का प्रयास किया।
- धन्ना गुरु भक्ति में बड़ी आस्था रखते थे। इन्होंने समाज में प्रचलित औपचारिकताओं व बाह्य आडम्बरों का विरोध किया।
- सिक्खों के 'आदि ग्रन्थ' में धन्ना द्वारा रचित 4 पद संग्रहित हैं।
- धुवन गाँव में धन्ना जी पैनोरमा बनाया गया है।

संत पीपा जी

- खींचीवंशी राजपूत 'पीपा' (प्रतापसिंह) गागरोण (झालावाड़) के शासक थे।
- ये भी **रामानन्द के शिष्य** थे, इन्हें भी धन्ना के समान गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भक्ति का आदेश प्राप्त हुआ।
- बाड़मेर के **समदड़ी गाँव** में पीपा का भव्य मंदिर है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र शुक्ल पूर्णिमा को इनके अनुयायी **दर्जी-समाज** का विशाल मेला लगता है।
- शिवदास गाडण कृत अचलदास खीची री वचनिका के अनुसार इन्होंने दिल्ली के तुगलक शासक **फिरोजशाह तुगलक** को हराया था।
- पीपा **टोड़ा रायसिंह** (टोंक) आए और यहाँ के शासक शूरसेन को अपना शिष्य बनाया। टोड़ा में ही पीपा ने तपस्या की थी। यहीं पर पीपा की गुफा स्थित है।
- पीपा से संबंधित साहित्य में पीपा की कथा, पीपा-परची, पीपा की वाणी, साखियाँ पद आदि मुख्य हैं।
- **'चितावनी जोग'** पीपा द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ है।
- पीपा ने मूर्ति-पूजा का विरोध करते हुए **नाम स्मरण** पर जोर दिया है तथा **प्राणि-मात्र की समानता** का समर्थन किया है।
- गागरोन दुर्ग में पीपा का निधन हुआ, जहाँ इनकी छतरी स्थापित है।

संत जाम्भोजी

- **विश्नोई संप्रदाय** के प्रवर्तक जाम्भोजी का जन्म 1451 ई. की भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को पीपासर (नागौर) के पंवार वंशीय राजपूत परिवार में हुआ।
- इनके पिता **'लोहटजी'** एवं माता **'हंसा देवी'** थीं। अपने माता-पिता के देहान्त के बाद वे गृहत्याग कर **सम्भराथल** (बीकानेर) में रहने लगे, यहीं उन्होंने **विश्नोई संप्रदाय** (1485 ई.) की स्थापना की।
- इन्होंने अपने अनुयायियों हेतु **29 नियम** बनाए।
- जीव कल्याण तथा वृक्षों की रक्षार्थ प्राणोत्सर्ग करना, इस संप्रदाय का इतिहास रहा है।
- पर्यावरण के प्रति लगाव के कारण जांभोजी को **'पर्यावरण वैज्ञानिक'** भी कहा जाता है।
- 1536 ई. में बीकानेर की नोखा तहसील के **मुकाम तालवा** गाँव में इन्होंने समाधि ली।
- विश्नोई संप्रदाय का मंत्र था- **''विष्णु विष्णु तू भण रे प्राणी।''**
- जांभोजी द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ- **जम्भ संहिता, जम्भसागर शब्दावली, विश्नोई धर्मप्रकाश** तथा **जम्भसागर** हैं।

35 राजस्थान में चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ [Various Schools of Painting in Rajasthan]

राजस्थान चित्रकला की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहाँ के मंदिर, महल, हवेलियाँ आदि भिन्न-भिन्न चित्र शैलियों से सुसज्जित हैं। राजस्थानी चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विभाजन **आनन्द कुमार स्वामी** ने 1916 ई. में अपनी पुस्तक **'राजपूत पेंटिंग्स'** में किया था। राजस्थानी चित्रकला का उद्‌गम गुजरात की **जैन अपभ्रंश शैली** से माना जाता है, जिसका प्रभाव सर्वप्रथम मेवाड़ पर देखा जाता है। कालांतर में राजस्थानी चित्रकला स्थानीय विशेषताओं, मुगल शैली, कंपनी शैली, कांगड़ा शैली आदि से प्रभावित होती रही है, जिसे निम्नलिखित बिन्दुओं में समझा जा सकता है—

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ
- राजस्थानी चित्रकला की विभिन्न शैलियाँ
  - मेवाड़ स्कूल
    - चावण्ड शैली
    - उदयपुर शैली
    - नाथद्वारा शैली
    - देवगढ़ उपशैली
    - सावर उपशैली
    - शाहपुरा उपशैली
    - बेगूँ, बनेडा, बागौर, केलवा ठिकानों की कला
  - मारवाड़ स्कूल
    - जोधपुर शैली
    - बीकानेर शैली
    - किशनगढ़ शैली
    - अजमेर शैली
    - नागौर शैली
    - जैसलमेर शैली
    - घाणेराव, रियाँ, भिनाय, जूनियाँ आदि ठिकानों की कला।
  - हाड़ौती स्कूल
    - बूँदी शैली
    - कोटा शैली
    - झालावाड़ उपशैली
  - ढूँढ़ाड़ स्कूल
    - आमेर शैली
    - जयपुर शैली
    - शेखावाटी शैली
    - अलवर शैली
    - उणियारा उपशैली
    - झिलाय, ईसरदा, शाहपुरा, सामोद आदि ठिकानों की कला।
- लोक चित्रण की परम्पराएँ

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

- लोक जीवन से जुड़ाव, भाव प्रवणता, विषय वस्तु की विविधता, विभिन्न रंगों का संयोजन आदि महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं।
- धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों पर पोषित-भक्ति और श्रृंगार का सजीव चित्रण।
- विभिन्न ऋतुओं का श्रृंगारिक चित्रण कर, उनके मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अंकन किया गया है।
- प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ नारी सौन्दर्य का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला को एक विशेष पहचान देता है।
- राजस्थानी चित्रशैली विभिन्न राजा-महाराजाओं एवं सामन्तों के संरक्षण में फली-फूली है। इसलिए यहाँ के महलों, किलों, मंदिरों और हवेलियों में अधिक देखी जाती है।
- राजस्थानी चित्रकला पर प्रारम्भ में जैन शैली, गुजराज शैली और अपभ्रंश शैली का प्रभाव था। बाद में मुगल शैली के प्रभाव से राजस्थानी चित्रकला में राजसी तड़क-भड़क, विलासिता आदि का चित्रण हुआ है।

Note :- (1) राजस्थान में आलनिया व दर्रा (कोटा), बैराठ (जयपुर), दर (भरतपुर), गरदड़ा (बूँदी), ओझणिया (भीलवाड़ा) आदि स्थानों से शैलाश्रयों (गुफाओं) में आदिमानव द्वारा बनाए गए रेखा चित्र (अकारद चित्र) प्रदेश की प्रारंभिक चित्रण परम्परा को दर्शाते हैं।

(2) वी.एस.वाकणकर द्वारा 1953 ई. में कोटा में दर्रा एवं चम्बल घाटी, झालावाड़ के निकट कालीसिंध घाटी, अरावली में माउंट आबू तथा ईडर में चित्रित शैलाश्रयों की खोज की गई।

मेवाड़ स्कूल

राजस्थानी चित्रकला की जन्म भूमि मेवाड़ है, जो **अजन्ता शैली** से पूर्णतया प्रभावित है। राजस्थानी चित्रकला का प्रारंभिक एवं मौलिक स्वरूप मेवाड़ शैली में मिलता है। मेवाड़ शैली के अन्तर्गत पोथी ग्रन्थों का अधिक चित्रण हुआ है। 1260 ई. का **''श्रावकप्रतिक्रमण सूत्रचूर्णि''** मेवाड़ शैली का प्राचीनतम चित्रित ग्रंथ है, जो **तेजसिंह** के काल में कमलचन्द्र द्वारा चित्रित हुआ। इसके अतिरिक्त 1423 ई. में देलवाड़ा में चित्रित **'सुपानसाह चरियम्'** में भी मेवाड़ शैली दिखाई देती है। उदयसिंह के काल में भागवत् पुराण पर **'परिजात अवतरण'** (1540 ई.) मेवाड़ के चित्रकार नानाराम की प्रसिद्ध कृति है। मेवाड़ शैली के अन्तर्गत विभिन्न चित्रशैलियों का विकास हुआ है, यथा-

चावण्ड शैली

- चावण्ड शैली की शुरुवात महाराणा प्रताप के शासन से मानी जाती है।

36 प्रमुख पर्यटन केंद्र एवं विरासत संरक्षण [Major Tourism centres & Heritage Conservation]

पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान, भारत के प्रमुख आकर्षक स्थलों में से एक है तथा विश्व पर्यटन मानचित्र पर अपना विशिष्ट स्थान रखता है। यहाँ देशी-विदेशी पर्यटकों हेतु अनेक आकर्षण के केन्द्र हैं। आँकड़ें बताते हैं कि भारत आने वाला हर तीसरा पर्यटक राजस्थान आता है। राज्य में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु **पर्यटन विभाग** की स्थापना **1956** में की गई त था **1989** में **मोहम्मद युनुस समिति** की सिफारिश पर पर्यटन को उद्योग का दर्जा दिया गया, राजस्थान ऐसा करने वाला **देश का प्रथम राज्य** बना। राजस्थान में शाही रेलगाड़ियाँ, किले, महल, हवेलियाँ, झीलें, रेत के धोरे, मंदिर, अरावली के प्राकृतिक स्थल, एडवेंचर ट्यूरिज्म आदि पर्यटकों को आकर्षित करते हैं और प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से राज्य के लिए रोजगार एवं राजस्व का सृजन करते हैं।

अध्ययन बिन्दु

- राजस्थान में पयर्टन का विकास महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ
- राज्य में पर्यटन विभाग द्वारा आयोजित उत्सव/महोत्सव
- वर्ष 2022-23 में पर्यटन में राज्य की प्रमुख उपलब्धियाँ
- राजस्थान के पर्यटन परिपथ
- राजस्थान के प्रमुख पर्यटन केन्द्र

राजस्थान में पर्यटन का विकास एवं महत्त्वपूर्ण संस्थाएँ

- राजस्थान में 1956 में स्थापित '**पर्यटन विभाग**' पर्यटन की व्यवस्था हेतु राज्य सरकार की नोड़ल एजेन्सी है।
- **पर्यटन निदेशालय-1955** द्वारा पर्यटकों के आवास, परिवहन एवं साहित्य प्रकाशन की व्यवस्था की जाती है।
- राज्य में पर्यटन स्थलों के संरक्षण एवं विकास हेतु **1 अप्रैल 1979** को '**राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC)**' की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय-**जयपुर** है।
- RTDC का नया पर्यटन लोगो—''**राजस्थानः भारत का अतुल्य राज्य**''
- राज्य में पर्यटन गतिविधियों हेतु मानव संसाधन का विकास करने हेतु 1966 में ''**राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट (रिट्रमैन)**'' की स्थापना की गई, इसका मुख्यालय भी **जयपुर** में है।
- वर्ष 2000 में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में '**राज्य पर्यटन सलाहकार मण्डल**' की स्थापना की गई।
- वर्ष 2001 में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में '**राजीव गाँधी पर्यटन विकास मिशन**' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य पर्यटन नीतियों को प्रभावी तरीके से लागू करना था।
- राज्य में पर्यटकों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए तीन **पर्यटक पुलिस स्टेशन** खोले गए हैं—**जयपुर, उदयपुर** और **जोधपुर**।
- राज्य में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक **फ्रांस** से आते हैं।
- यदि संख्या के दृष्टिकोण से देखें तो **पुष्कर (अजमेर)** में सर्वाधिक पर्यटक (देशी-विदेशी) आते हैं, जबकि केवल सर्वाधिक विदेशी पर्यटक **जयपुर** में आते हैं।

Note :- कैलेंडर वर्ष 2022 के दौरान (नवम्बर 2022 तक) **986.32 लाख** पर्यटकों ने राजस्थान में भ्रमण किया, जिनमें **983.24** लाख **स्वदेशी** एवं **3.08** लाख **विदेशी** पर्यटक शामिल हैं।

(स्रोत-आर्थिक समीक्षा 2022-23)

- राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु शाही रेलगाड़ियों का संचालन निम्नानुसार किया जा रहा है—

(1) पैलेस ऑन व्हील्स

- 26 जनवरी **1982** को प्रारंभ की गई लक्जरी ट्रेन।
- **R.T.D.C** एवं भारतीय रेलवे का संयुक्त उपक्रम।
- इसका एक सप्ताह का टूर होता है, जिसका रूट निम्नानुसार हैः-**नई दिल्ली**-जयपुर-सवाई माधोपुर-चित्तौड़गढ़-उदयपुर-जैसलमेर-जोधपुर-भरतपुर-आगरा-**नई दिल्ली**।
- पैलेस ऑन व्हील्स का इंटिरियर डिजाइन '**पायल कपूर**' ने तैयार किया है।

(2) रॉयल्स राजस्थान ऑन व्हील्स

- 11 जनवरी **2009** को प्रारंभ की गई लक्जरी ट्रेन।
- R.T.D.C. एवं भारतीय रेलवे का संयुक्त उपक्रम।
- इसका भी एक सप्ताह का टूर होता है, जिसका रूट निम्नानुसार है—**नई दिल्ली**-जोधपुर-उदयपुर-चित्तौड़गढ़-रणथम्भौर-जयपुर-खजुराहो-वाराणसी-सारनाथ-आगरा-नई दिल्ली।

Note :- 9 सितम्बर, 2020 को राजस्थान की नई **पर्यटन नीति 2020** लागू की गई। इससे पूर्व 2001 में पर्यटन नीति लायी गई थी।

मार्गदर्शक परिचय

M.K. Yadav
(RES)

राजस्थान कर्मचारी चयन आयोग द्वारा आयोजित संगणक 'Computor' भर्ती परीक्षा में सफलता हेतु 'सामान्य ज्ञान' (General Knowledge) अत्यंत महत्त्वपूर्ण विषय है। इस विषय में अध्ययन-अध्यापन का श्री एम.के. यादव सर को विशद अनुभव है। आपकी लेखन कार्य में गहन रुचि है। आपके निर्देशन में तैयार ग्रेड I, II, CET, REET एवं 'राजस्थान सार संग्रह' आदि पुस्तकों ने प्रतियोगी परीक्षाओं में बेहत्तर परिणाम दिए हैं, जिससे हजारों प्रतियोगी परीक्षार्थियों ने सफलता प्राप्त की है।

दक्ष प्रकाशन
(A Unit of College Book Centre)
A-19 सेठी कॉलोनी, जयपुर (राज.)
फोन नं. 0141-2604302
Code No. D-703 | ₹ 480/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु
WWW.DAKSHBOOKS.COM
पर ORDER करें
★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★